

**DPL-04**

June - Examination 2016

**Diploma in Prakrit Language Examination**

पाण्डुलिपि विज्ञान एवं प्राकृत पाण्डुलिपियाँ

**Paper - DPL-04****Time : 3 Hours ]****[ Max. Marks :- 100****Note:** The question paper is divided into three sections A, B and C.**निर्देश :** यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों 'अ', 'ब' और 'स' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों का उत्तर दीजिए।**खण्ड - 'अ'****10 × 2 = 20**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

**निर्देश :** निम्नलिखित सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य हैं तथा उत्तर की अधिकतम शब्द सीमा 30 शब्द होगी। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

- 1) (i) पाढालोचन के लिए किसका ज्ञान होना आवश्यक है?
- (ii) कोमल व कठोर लिप्यासन किसे कहते हैं?
- (iii) आदिम अवस्था के मनुष्य कहा रहता था।
- (iv) मिलित शब्दावली किसे कहते हैं?
- (v) पैलियोग्राफी को हिन्दी भाषा में क्या कहते हैं?

- (vi) इतिहास में सर्वप्राचीन लिपि किसे माना गया है?
- (vii) जब काल संकेत का अभाव हो तो पाण्डुलिपि की तिथि का निर्णय किस आधार से किया जाता है?
- (viii) शब्द के प्रकार लिखे।
- (ix) कागज पर नमी एवं शुष्कता का क्या प्रभाव पड़ता है?
- (x) रक्षागार से क्या तात्पर्य है?

(खण्ड - ब)

4 × 10 = 40

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

**निर्देश :** निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से कोई 4 (चार) प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 10 (दस) अंक का है। अधिकतम सीमा 200 शब्द।

- 2) लिपि कर्ता में क्या क्या गुण होने चाहिए?
- 3) अनुसंधानात्मक योगदान को समझाइये।
- 4) लेखन प्रक्रिया क्या है?
- 5) प्रकाश का दुष्प्रभाव एवं नियन्त्रण पर टिप्पणी कीजिये।
- 6) मार्डन मैन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी के लेखक के अनुसार संग्रहालय के भेद स्पष्ट कीजिये।
- 7) भोजपत्रीय ग्रंथ से आप क्या समझते हैं?
- 8) खरोष्ठी लिपि पर टिप्पणी लिखिये।
- 9) यांत्रिक शब्द किसे कहते हैं?

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नों में से कोई 2 (दो) प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 20 (बीस) अंक का है। अधिकतम सीमा 500 शब्द।

- 10) प्रतिलिपि में विकृतियाँ कौनसी और कैसे हो जाती हैं? समझाइये।
- 11) लिपि के इतिहास एवं विकास क्रम को समझाते हुये प्रमुख प्राचीन भारतीय लिपियों का उल्लेख कीजिये।
- 12) अर्थ के तात्पर्य समझाइये और अर्थ समस्या के कारणों को समझाइये?
- 13) निम्नलिखित किन्हीं दो पाण्डुलिपियों का आधुनिक रूपान्तरण कीजिये—

(i)

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ हंतासिद्धेदियव  
 यथाश्रयसिद्धसाधुसुखित्वंकेहिनीतिविदिर्निनेभावेण ॥ २ ॥ संमिगतसिद्ध  
 लोपिसिद्धमंदरेवसिद्धपासासदहासिगाभनीनरससंभासिसारे ॥ ३ ॥ एया  
 यसासमभिसिगाभनीनरससंभासिसारे ॥ ४ ॥ पुणासिद्धेदियव  
 इमिद्धेदियवयथाश्रयसिद्धसाधुसुखित्वंकेहिनीतिविदिर्निनेभावेण ॥ ५ ॥  
 धर्माविसिद्धमंताससिद्धिसुखयदिहोदिसिद्धसाधुसुखित्वंकेहिनीतिविदिर्निनेभावेण ॥ ६ ॥  
 सिद्धेदियवयथाश्रयसिद्धसाधुसुखित्वंकेहिनीतिविदिर्निनेभावेण ॥ ७ ॥  
 संमिगतसिद्धलोपिसिद्धमंदरेवसिद्धपासासदहासिगाभनीनरससंभासिसारे ॥ ८ ॥  
 पुणासिद्धेदियवइमिद्धेदियवयथाश्रयसिद्धसाधुसुखित्वंकेहिनीतिविदिर्निनेभावेण ॥ ९ ॥  
 धर्माविसिद्धमंताससिद्धिसुखयदिहोदिसिद्धसाधुसुखित्वंकेहिनीतिविदिर्निनेभावेण ॥ १० ॥

(ii)

अष्टपाहुड

अष्टपाप  
१

१६॥ उर्निमः सिधेस्यः काऊणामोयारां॥ डिणवरवसदस्यवहप्रसस्स॥ देसणमयांवेष्ठा  
 मिाऊदाकम्मसमासेण॥ १॥ देसणपूलोक्ष्मो॥ उवइठं डिणवरेहि सिस्साणं॥ तंमोऊणस  
 कलोदेसण्डीणेणवेदिस्से॥ २॥ देसणत्तन्नघा॥ देसणत्तन्नघा॥ देसणत्तन्नघा॥ देसणत्तन्नघा॥  
 रयत्तघा॥ देसणत्तन्नघा॥ सिद्धंति॥ ३॥ सम्मत्तन्नघा॥ जाणंतावज्जिव्यास्सच्छा॥ ४॥ अरा  
 द्दणविरदिया॥ नप्रतित्तेवतच्चेवा॥ ५॥ सम्मत्तन्नघा॥ सुहुविअयत्तवत्ताणं॥ एतदं

(iii)

तिबोदिष्ठां॥ अविवाससदस्सकोडीदि॥ १॥ सम्मत्तन्नघा॥ देसणत्तन्नघा॥ वलवीरिअवहमाणजेस  
 वे॥ क्तिकलुसयावरदिया॥ वरणणी ऊत्तिअइरेण॥ ६॥ सम्मत्तन्नघा॥ लयवदोत्तिणं॥ दिअण  
 एणवत्तन्नघा॥ कम्मंवात्तन्नघा॥ वत्तन्नघा॥ सपत्तन्नघा॥ ७॥ उदेसणत्तन्नघा॥ एणत्तन्नघा  
 वत्तन्नघा॥ एदेत्तन्नघा॥ सिसेपिऊणंविणसंत्ति॥ ८॥ ऊकोविधम्मदीलो॥ तंऊमत्तन्नघा  
 लियमजोगगुणक्षरी॥ तस्सअदोसकवत्ता॥ नयानत्तन्नघा॥ दित्तिणं॥ ऊद्वत्तन्नघा॥ मिविणं॥ ९